

क्रमियकल। वङ्ग। मिरु धर्मोत्तम प्रभुकिं आङ्गप्रवक्ता। द्रवदयका।
 द्वाव संया मप्रगल। ववननायपसादिक। द्रवयुवमानायिका।
 याय। स्तकावविना गीलवननगजवननयुहावनन। धनकाधि।
 धिपुकाधिधिप्रववनन मथनपीन कोरुक्था। नसाकवय।
 संद्वाव मवक्कवला वाय। ववननधिस। नमस्वमाव॥
 नगीवहसु सताग। शीक। सद्रामया वास॥ द्रवहानिशय।

538

निमिश्रितनडु ४४॥ ॥ स्वप्रपत्रिका अग्निदासा वनदवगा राजः
नखाप्रशयाथं गलकिसिपित्रा दगाकत्र दवगासाधनननसप्र॥
प्रहाससात्रिकाजन प्रप्रसंनव ॥ अकालमरु जालअगिगाल मान-
कादरे नानावाधिसामगयाकयदं १८ । वोलयाकय प्रहावाधिर
साकदं २० ॥ गलुद्याककदं ३० वोलद्याककदं ७० । ननुवाग ग्याप्र
सदं ८० । अगिगाल कलुवाग थगिनमरु घंदं ३८ ॥ थगियावर्म

सात्रकयामगगद्विदम्बायकारिकसाप्र वादितीनक्रवृद्धवाग
कदमरु । अकालमरु निवावनयाययाग । अग्निकर्मयाय यम
दयकं वलिविय गोमुदान कंगदानविय धर्मधारुयजायाय इड
आक्रम क्षमयावक द्वाद्रुगा । जागनयूजा प्रसाद्याय थगिनगाकिर
व ॥ १ ॥ २०० ॥ वादितीनक्रवृद्धवाग ॥ अदिद्यनसिद्धि वृद्धनम
जन अंगावनमरु वृद्धनडु पमिदरुसागिनअकालमरु गुकनक

लयालयश्च कालगानिष्ठमनमरुदलपञ्चायमिदवता रुद्र
मनष्याजाम। नागमन्त्ररुद्रवस्त्रामवर्त्तुपीकवर्त्तुयवेष्टा
वृषभासिपर्वरुद्रवता। नलमनाजाम वयनस्य गुरुयथा
गामिप्रयाप्रकागी धसवाव वरुमिग वरुपुरुप्रव नक
य प्ररुदय र्यात्र सत्रय मखिप्याषनसाथिवसासववदु
साकाप्रसदागाल। समसय वलवन्कात्रस। समवायुथमि

मिलथानगत्रयकप्रद्वद्वप्रखात्रप्रनगलस यामप्रद्वद्वप्र
प्र॥ ॥ स्वप्रयमिकावप्रसंखप्रद्वद्वप्रकाथद्वद्वप्रद्वद्वप्रकाथिकः
नागनारुकायमावागीयकावलधनकागी॥ ॥ प्राहामिका
लमरुदं। जालवाधिमखपाजन कथस्याक सालवानथा
रुवदं॥ द्रसयनवाकादं २० संयाप्रसयालमरुदं
मरुदं॥ प्राकागलसिमास्वाहाननकाटिनवयिवरुयथि

[illegible]

आरुद्रावतलयागमसकदयत्राहस्तसखीलजयरु। १३ कनक २ वदक
 रु २ वृषवाप्रियाद २ सुधनत्राप्रियाद ३। थकिवत्राप्रववमात्रागा गीन
 वनक धम्मस्त वलवन्त वलिजाल गीनदाशमत्रय समस्तसयव य
 नश्यव स्वययेयाप सखववत रागीशय यमादिक वदमिण कनक
 थस्तदयव थमस्वयदमदा दवयजायायद्धा व अकिथिमान्ययाक ध
 काउ सत्रय। धीलवील थकिस्वराव ॥ ॥ गिलथान गीवललाकउम

याय वत्यावन थमिनगान्तिशय यत्र साय चासत्रायार्ह मासि
वसनक्रुथकृद्रुसुशयव ॥ ४ ॥ ५६॥ यनवसनक्रु
नामजागक गानिग्वत्रिं वृदस्यमिन शिनाल वृद्धदवना यत्र
दवजाग माजालसत्य ॥ मिनत्रासिपाद ३ कर्क मत्रासिपाद २ ॥
मजागइवमात्रागो पलिकइय स्वयययाय विद्यामयित्र दव
यूह दानात्रथिलगानि वननायस्वराव ख्यालसत्रयस्य सादिकदशा

थलगीमवाद्यप्रयनानाजामदय दवयुत्रमासावव्याकरुकिइयव
त्राजिकससिवकइय वात्रकसइ ४ खि लादागसथय्मगंखदयदं
कत्रागय्मं ३ काय थमिस्वराव ॥ ॥ मिनथान व्यागस रुमिश
त्रिद्रुथमि ॥ स्वयययिक्ता दवना जात्रावन वरुनानाजालंकात्र
त्रावथमिस्वप्र ॥ ॥ जादात्रइइ कसिययव ॥ वागवाहुवाक
न प्यनत्रायनमरुपदं ३ वेप्रप्य वायिकनकाटि निवरुयदं ४ मि

मानकानिनिवकयदं १८ लंखयाकयनमरुखं २० मरुखाटकमः
रुखं २२ अमिगालमरुखं ३८ कालनागद ४२ गानियागदं ४२ कः
लअमिगालथमिजकालमरुखं ममानकयान ॥ गानिकमसे यथत्रका
थयात्रक द्रुगद्रुगोत्रययजा नीवयजा आगमयजा अग्नियजा द्रुग
न क्रुयात्रयजा स्वस्त्यनश्यथनयत्रमाय २२ म्यादावपासनाथक
गानिगत्रवात्रक द्रुमरुखदिनशत्र ॥ ३ ॥ - २६५ - ॥ यथातकयया ॥

गानिगत्रकिंयुदस्यमिनमरुखिगालरा यथकलगावादानदवजाग। ग
ऊसत्वा। ककैटत्राशिपाद। थयदिनसजागइवमावागाधीननीलत्रयया
धिनकस्वययुयया यथादायादाज्ञानस्वरावाक जायत्रसयव धर्म
ययलउकि दगालस्वरावाविनाधिपुकाधिरमवागागासत्राव अमिग
निकासलवायत्रयत्रजसयद्रायययवयालि ॥ वासजसा मद्रात्र दिव
यसव यन्धयकादयिव वलिजालनसंयकित्रायव श्रीकायो वरुपु

पूव्यश्रुतमाप्तिमास्वगावकलकसुश्रुयत्वंकवथमिस्वगाव ॥ ॥ किलः
 धानरवात्रसगत्रयकसकत्रसकृद्वसकसमथमिस्विक ॥ स्वययत्रिका
 ग्निकसौयवर्गसजायार्थानादव्यथमिस्वप ॥ अकालमरुयश्चिलज्जाद
 वरवाययात्रइइधयिग्रत्रथमि ॥ धारुवागदं १ शिरवास्याकअमिगालदं २
 कालदायदं १० सयोरुनायेनाकययनत्रायमरुचंद २० चिनात्रनअ
 विवालयकयगसुपालनमरुचंद २४ सदाजालद २२ गीथगमनस

मरुचंधमिथकासनमरुचिदायकयागदासद्धायकद्धयादालाहा
 नावियदवयजादानकर्मनसाकलखनयेत्ययजागीवयजाडाहान
 थवगात्रिप्रशादावेदानंत्रियथमिनयत्रसायद ११ स्वादावपासत्राग
 कयवापाटनक्रुवदस्यमिवात्रथकृद्वमरुचिदनइवा ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 अरुचनक्रुया ॥ नाप्रजाककया ॥ कायवादानवाक्रमजानमाकल
 सत्वावदस्यमिहिं ॥ सफगाधुवदवगागायदाकडनएवदवात्रयन्

कृष्ण कर्कशत्रासि सप्रिय। प्रियाश्वाद्य धर्मस्तु सनदादयस्त्वकाव
यानिप्रिमिनः ३२ स्वभय चत्रस्त्रीया कश्यप कत्राकदं ३३ वरुण आय
प्रिययत्र अमित्राणि यत्र वंल प्रुकिमान सदा लद्धा व यात्रिअप्रमः
धियुका धिच्छि उवयन थमिस्त्वकाव ॥ ॥ गिलथानललाटगीवैरु
इनगलभमि ॥ स्वप्रयत्रिका अग्नि प्रमः ॥ न प्र प्रयेस्वान ससाथमि ॥
आदावप्रयदधित्राकश्यव ॥ धारु वामपीरु वामदं १ सखयामनकवि

वयमरुख्यदं ११ मदावाधिगकुरयदं २२ सख्ययनानारुयदं ३०
वानप्रिकनकामिनीवरुयदं ३२ मानवायकुरयगकुरयदं ३२ वाजद
उगकुरयअरित्रात्ररुय थमिपकात्रनमरु प्रश्यकयाकदवरुमि
सरु लदयक धर्मसाला प्रवाश्यात्रकगीवरु कयायव ल्यात्रनगानि
स्वमि कयायअग्निपूजा दानवियप्रकालमरु नाप्रथमिनयत्रमाय
दं २० स्वादावमित्राथशुकवात्रथकुरुमरु दिनशत्र ॥ १ ॥ ॥

मयनक्रुश्या ॥ यश्चकाल गलिभ्यवदवगा । मसवादान प्राक्रम ॥
मखिकसन्वा नायवर्क दाकडां सूर्यक्रुशिरुवापि यसादिक
नकउवनक थसथधमकागीनाव कवाकनमान्ययायिववरु
लकसद४खिकवधं धानवाय ववनथील थिलमिभुसया म
धियकाधि विद्यासय कल्लाथल अहिमानमहाल हलहाव
खत्रसयिव थमिस्वकाव ॥ ॥ मिसयिद्ध खालमगलयकस लाद

कस ॥ स्वप्रनाना अलंकासनयनिव ॥ ॥ धादुवाकपीकलद्धि मय
लदं२० सयिकवीगत्रागदं४ नानावाधियन वायदं२० उलसप्रधि
थिगलनयनिवदं२२ सया मरुयजि सेंवे सजिव संसय दं२० दं२०
रुयसंया मप्ररुय थमिनयकाल ममालकया कथेययका थाय
गीवथायनायाय पक्षवक्रापाथयावक जागनयका अमियका
यवस्यावन सर्वत्रागगानियत्रमाय १० साद्यमासक पूयक्रुगानि

वायसस्तुदिनशुभा ॥ ८ ॥ ॐ ॥ एवेदास्तुलीनक्रुञ्जा ॥ ना
ना ॥ आसप्तदशना लवकवादान मानुषजात ॥ सिंदूरसुत यलिक
पुदयरागीशुय नकुवन् यवदान प्रकागीधिलमिगुधिलवत्र
नयायद्यावगीकवाय सत्रय झादगनील मिखाकिद दवकल
यिगद्वाक स्वायधिल दवामिगुयमिस्वकलानयाय धनवन् सप्त
कायसविष्णुनास सथानत्राव वनिजालकमेनदय थमिस्वकाव ॥ ॥

मिलविद्रु गजयगस स्वागस जलस दृष्टस पाठकस दिद्रुथुकि ॥
स्वप्रयमिका दवगापजालंखसक्तमाथ ॥ आहानत्रादाजिजिपावद
य थमिनययय ॥ धावुवाक पीकनाग विन्ना वास्पाक द्रुगयकस्पा
स्वास्पाक अकालसमुदं ३ मदायाधिदं १२ अकिगालरुय मान
यदं १४ मरुद्यालदं २२ सिमानकागिनीवरुय मित्रियानिमि
रुयदं २८ का मरुद्यालद ३८ अकिगालथकिरुयममानकयाक दृ

[illegible]

मधि सयव गडवन विद्या सिद्धि नमः प्रकृत धर्मि स्वभाव ॥ ॥ किलः
विद्रु कयात्र म गत्रय नमः दसु प्रयाऽप्रथमि विद्रु ॥ जाहात्र सर्वरु नमः
गत्रिन्ना धारुवा नमि नल सिद्धि दं न कधि नमः कल यद्रु पि जा न न नं न सा न
वायव रुय दं २० आसदा य वाचिन का मि निव रुय दं ३० वाचि दं २० ग
याट क कवा न या नि मि नि न ४० य म य ग रु द य थ या गा नि ये य जा दे
व पूजा दा म क मिया य क यं व ल का पा थ या य क आ ग न पूजा व ल्या व न अ

॥ लमरु निबालन यलमायदं २१ स्वादाव धर्मदान प्रसक्तं या श्यावा
 द्वाखाक दावदायु लमासा कृष्णनवमीशवननक्रुगनिध्वलदात्राशि
 प्रसक्तं श्रुवा ॥ १० ॥ रुक्मनक्रुगया ॥ यंचवगात्रसावी कि दवगाजप्रदः
 वना किमिवादान दवजान सासत्य रुद्रभाव उावरबाल उयमीश्रवसाः
 वाना यलुमश्रय गृह पसादिक मिमाजामिश्रमा नउवन रुयव वलव
 नमरुन पीनि ववन ग्यादाय थिलप्रश्रववाय मिखावाययवसमाव

394

538

दुययापु वदुमिगु पुरुधनलारु मदावदि रुथिइयव मायावदि वर
न मयावि विद्यारुगी अरि मानरागी इयव गोगा मयाव पाययव धर्म
वक्तु मथ वक्तु दवकुल कलागनाय पंचराया कुलविकु शुभ निन्दायाय
वसत्रंग ममदापी नि क्रिय को विदागाल धन मययथ मिस्रकाव ॥
मिलविद्र बादा मलगव म प्याग म कुल म खल कु म खाल म मिल ॥ स्वप्र
म मस्तु म निव ॥ आदा वयु मान का जन ॥ धा रु वा क धि म वा ग अ जि न न
न वा ग दू १३ वा १३ दं १३ माल सा क का म वा ग दू २० वा २० दं २० मि मानः

कानिनी वयु विगमि न मा म प वक्तु कानिनी वरु यदं ३२ अ मि माल ग
क द्याग क रु यदं ३८ म सुया ल रु य अ मि माल स्वा म रु यदं २० वी ल रु य प
व मा य २८ द न दि व ना ना द र्थ मि कु ल रु उा दान वि य क्त न का टि दा व डि
म नि क्त न म रु ॥ थ या नि वा व न या य या क इ वी माला न गी व य जा व क र
रु था य ॥ अग्नि य जा नि धि ग म न म म रु रु वि षा ॥ १० ॥ - २९९ ॥ १० - ॥
ए वी पा र न क रु या ॥ ध नु वि वा दा न मा न या जा ग मा क ल म ल व द द वः
मा मा य र्वा ल प लु क प्या ग रु व द ध थि ल ख का व ध र्म जा ला अ थि ल ध न

सर्वजनवर्षाणि वाजस्यवानद्वयकाय वात्रकसदात्रिद्वयवत्सग-
समावकजसिधर्मवृद्धिदवकुलस्वयत्रप्रगायापगमिनकोवद्रुमिध
वागायकादयद्वयलिथंमखिधिलववनस्वाययवधनकविगलकल
नायवावकावप्रजसमागीयुवककिथलवेद्रुमिधकोगीयापीन
धमिसमाव॥ ॥मिलत्रिद्वयानसवादासनधमद्वयसद्वय
७प्रथमि॥ स्वप्नानाप्रलंकालन॥ वाहुवाकपिनगोगप्रमिगालक
जिर्मुद्रगयकवथाप्रकालमरुद्र॥ २॥ २॥ २॥ अजिर्त्रवषयाकयदं॥ २॥

वलायालयाविनकाटिनीवरुयदं२० वागप्रमिगालदं३२ सयाप्रवला
वावदं५३ रसयाकयदं११ खानवायवरुयधमिजकालमरुप्रमालक
यागवक्रयसथायगानिस्वकिकमानवलायनेधमिनयत्रमायदं२२
अथवा२२ दववषद्रगद्रयाद्रुनकाकिदावजथवागामद्विदावेमरु
दिनदिनवाथकयदीषानरेक्रययाशुक्रवात्रथरुसद्रुनामरुदि
संरुवा॥ १२ ॥ २०॥ ॥ उवावाटनक्रयया॥ पंथगालविषुदवनागानि
लक्रु॥ वात्रमिवादानमानषजग॥ माकलसत्व। द्वादनायव

तदगमसखिजायत्रसपीयप्यययथवकमाकवमहापीनिकुपन
 यमिश्रयवमखिसत्रयवात्रकमदाविदवायकिंकायमावायकोज्याः
 दधर्मगीतकूलखालदानगूलपवशविरुकूलविकसमसूपत्रिकः
 लनपीनिकश्यगन्माल्यपीयकूलमदावलिजालपशुजामिनकागी
 कसमाव॥ ॥ गिलत्रिकुसवादानपंदसुसगीयासखालसपाठम
 विद्रथमि॥ सप्रजलकिजावसुसया॥ जादानप्रवृत्तय॥ धादुवाकपि
 रुदगमत्रीयकालमरुद्रुदवा२दं२यनमायदुयारुयचिचकाल

नयनिवरुयदं१५ महायाधिदं१५ कामजालदंतात्रमनामजाजदं२१
 मरुद्रुदलदायदं२८ काकिनीयारुयदं३२ वीत्रनययकयखानययकय
 दं२० संयासप्रवलाद्यालमरुद्रुपंधमिजकात्रमरुद्रुसमालेकयारुगीवयः
 जात्रकयेसथायदामद्वयकगानिकसमवत्यावनयायपंदालपूजाय
 मिआयलिजायपत्रमायदं२५ मादावजयपुष्टं२५ सीपुष्टं२५ नक्रु
 जगावावाकिममरुद्रुयपात्रदवद्रुमिनकाकिदावमरुद्रु॥ १२ ॥ ० ॥
 यवदानक्रुया॥ गिनालविषूदवनानत्रवादानदवजाम। माकत्रमः

त्वस्मात्तत्त्वं प्रथमं विविदे गगनं स्थितं पृथक् न वदुः मित्रं वात्र कस्यदा
 कत्रा गच्छेत् कनहाव कश्चुना मत्तं ग्राह्यं सवकश्च वानिजकश्चिनकन्या
 विगकाधिपतिस्तथाव ॥ ॥ मिलिचिद्रयीव स उदय कर्तुं स गत्र सदा
 ॥ ॥ ॥ स्वप्नं जग्मि कला ॥ जाहाव प्रस्यमाना घायपीडा ॥ धातुवाकपीन
 नकनेत्रागं कथं गगनं कर्तुं शलं सखपाकन वे स प्येक विद्याधिवीरु गाम
 दं ४५ द्रुमावे स प्येदं १२ दिन ग्राह्य कृषि गाम कलदं २० स्त्रीयानि मिमिनइ ४
 खदं २२ मिमा रुय मान वाय रुय दं ३३ कल कृषि गाम दं ४० घन खय रु

यदंजु कलजाके गाल रुयथ मितन मरु प्रहृष्ट सादं १०० मरुदिन श्रय मा
स्य उगाधार नक्रु गनिधल नाल मरु रुवमि जकी ल मरु समाल कयाः
रुहा मरुय क द्रु गद्रु मा मना माला नगी वय जाल नक्रु यथ थय प्रहृष्ट नयः
जा गान्ति कर्म न वलि विथ क गल कर्म त्रका पाथ याव क अकाल मरु नि
वात्र लश्रय ॥ २० ॥ - ॐ - ॥ यने सन नक्रु यथा ॥ सफ नाल विषू दव
ना ॥ बा जाल वा दान नक्रु मजान सिंद मत्त पीन वलू क मना मा मना वधि
श्रव न सव रुन व पीनि सर्व वाकि अरु गमे द्वा दृ ४ रवी त्रिथं स रवी धि द ४।

आखलसयव वलिजालनधनदयव स्तुतान्नारु वाहनादाक वागाः
य गसदीय त्रोगीनिपन मलरुवन मायधन दानि अरिवालरुय किमि
यारुय गालु स्वयावशासय कगलकर्म नमिथमहाया २ थायमनिदय
जगमयखाति अविष्णुगीलवन कजगमं ३ कायननदयव ल्यायः
वालविरु मिथनमपीय कजगम व नवलय धरु अरिमानमहाव दास
पीय हलसहाव झाकाखयकाद्याल हल मयवादिथमिस्वमाव ॥ नि
विद्र वाहाग गजस पादहदन रुक्मस जयस मखस थामि ॥ स्वप्रद

दावमुसमस्त ॥ आदात्रविना सावित्राजन ॥ वाहु वाग पिक वाग अरिमा
ल अजिल मित्रमय कयियाद्रु यात्रायादि मिखासाक वे सपदं १३
रिवालदं २० प्यारुयदं २२ गुरुय ददय गुरुकापि वागदं ३२ अ
रिवालरुयदं ४३ प्यारुय गानिपोरु गुरुवागथमिपकात्र वागमस्तुः
खंडपायदासकर्मयाय कलमयजायाय गायधनदाधर्मिधरुयजाः
याय वलिविय यजरायक यत्रमायदं ८९ स्वादादयनत्राया कपुपक
रुवलीनकुरु गानिगववात्रमस्तुदिनइत्र ॥ २२ ॥ ० ॥ यवरेदः

थिकाष्ट आसन मानव्यजान् मासत्वं । सापवर्क यल्लिगधर्म गीतवन्
प्रथवन् रुक्कर्म दामान् मासु सव यनकालिगन्धमात्य पीय दवल
नानाकथासव सदादुर्धमान् रुद्रदन् दारुमादाक मिखासाक यम्यः
लपयुजान् गोसन् रुय सापमिक मा वद मिश्रवस्तु पीनिकं ५ कत्राक
कायद्वं ८ पत्रिवालयाको सप्रस्तुजन पत्रिपालयाय वाद्यकिद वाद्रस
सग्याक वाविदय लिथं चलदगगप्रखिश्य साक वेलाग सात्मा नाः
नासापव सादवायाजनवपथल साया वदी वगग्यादाय ल्वाययव

यिरायनप्रंरुष्ट यत्माक सग्याक वदा २ थाय ससिगदय यत्रदगग
यद्वाव दल थमिस्वराव ॥ गिलयिद वादा सजल स पाए स
दुप्र गीवा स थमि ॥ आकात्र जाजादि सप्रस्तुनययव प्रकास मरुदं नकः
विवागदं १० मषणमन कषिवागदं १५ जलरुय दवदा चल गीनि पागदं २२
नप्रया रुयदं ३२ संया सप्ररुय साप्रगाया रुय थमिरुय सप्रत्रक याक
दादव यजा साक ग्वत्र यजा दाप्रद्ययक गानिक मने वलि विय पक्षत्र
क्रापाथयात्रके यत्रमायूद १०० म्वाय यनवाया रुधूषष्ट मिजादान रुज

नृपदादिदवना गन्धर्वदवना ॥ अश्वत्रायणी गन्धर्व ॥ गलवादा ॥
जाग ॥ हुलङ्ग प्रत्यक्ष प्रखाल इयं दव अथवा द्यादरवाग उरुम
मयवाशिथवला प्रजागुरुवमात्रागो विद्या गाम्प्रयथाननायक
रागीसमावस्वयत्रमनायाय यंत्रलत्रिक वात्रकप्रदात्रिद गाम्प्र
मावन प्रसात्रकायव ॥ यमकदववन यत्रदगगमसि वलवन सा
क वलिजाल दनाप्रदाव ग्यादयक प्रिमागाम्प्रिमा युत्रयाकसाद
शाथप्रप्रयाधसंशय प्रकलंगपीय आलम्प्रयाककाजसिद्धि उजा

इक कत्रददवाकुरकिव प्रजायायक ग्याम प्रजायायिव वावाकिद
प्रिमशयद्वत्र कत्रागनाय प्रुहुइककमायाय प्रप्रकप्रनप्यपाकप्र
लसोकार्यद्वत्र प्रनधनमात्रकिव ग्यादाय ववनकायमायाधप्र प्र
वावलन्यप्रव प्रिमागयद्वत्र लथमिस्वकाव ॥ ॥ गिलविद्रप्रिखील
लप्रयोकाप्र गत्रयमप्र उप्र विद्रथमि ॥ स्वप्रनासाविधि ॥ आदाव
प्रनापप्रशनावनयव ॥ धाहु वागपीम अकालमरु अमिगासद
प्रयोदं १२ जालवाविदं १६ असावसायद २१ चप्रयाकय खानवा

संसाप्रयारुयवेलागदं ३२ क्वात्रयानिप्रिमिनरुयदं २० क्वात्रागमिप्रि
 रुयदं ३२ क्वात्रागमिप्रिमिनरुयदं २० क्वात्रागमिप्रिमिनरुयदं २० क्वात्रागमिप्रिमिनरुयदं २०
 यव ॥ थमिनपत्रकात्रममालकयामगास्तुदन धमपाठु यजायायजल
 जहू गीवयजादाप्रद्वषकयोसाकदयकवसिवियथमिनगानियायद
 २२ म्वायकलिषद्विगीकद्रअग्विलीनरुय आदिसवालमए रुवामि
 २० ॥ २० ॥ ॥ रुवलीनरुयया ॥ निमालवाद्रुदवगा ॥ पुरवा
 दानमानपजामगजसल सगपिमवल् अगात्रकन मपत्रासिपत्रि

यलू थवलाप्रजाकइवसावागा र्वात्रिशयलमिमिप्रिदगमिप्रिदवः
 द्विविकुधंदवदयकनिमिमिनधनमायव वालकप्रपिगानाप्रदाविद
 कीवियागक्रमासदा मित्रियानिप्रिमिन पत्रदगयनीव त्रिधं प्रदि
 गाकचकावलवनरुजवाकमिगधिल पत्रदगगमाय ब्रजसवायाय
 वलिजाल विमयंत्र पायआत्मा रुगववनवालविनदसादिकगः
 कलसंख्यात्रिजालम्रयाकाकार्यसिद्धि आयववा सन्नात्रिभजथः
 मिस्रमाव ॥ ॥ मिस्रविद्र खालप्रयाकोसजलस धगजानवादाप

द्वन्द्वप्रपञ्चप्रसादागमप्रविद्रुथनि ॥ स्वप्नानाविधि ॥ ॥ आह्वयप्रः
 प्रस्तुयव ॥ यकासत्रायनयुत्सवाधिदं २ कलमिगालत्रायदं १८ यथा
 रुयदं २० जालरुधिनागदं ३२ यारियनकानि निवलय यथा रुयदं २०
 असावधमिदियरुनसादं २२ स्वायव कानिकगुफधनहननक्रु
 वद्ववात्रवागिसेमरु ॥ अकात्रमिणमसात्रकयान स्पष्टरुजागिथ
 प्रजलजलरुदाप्रशयक वस्यावनगानि स्वस्ति कनअन्नदानयायथ
 नित अकासमरुनाग ॥ ॥ २१ ॥ ॥ नितिसफविग

नितिकुरुमासासंपूर्णप्रसाफ ॥ ७ ॥ ॥ गुरु ॥ संवत् २०१४ योषसा
 ॥ १०८८ यथा दनि ॥ १०८८ वात्रधकुरुवायधनकाशव ॥ ॥ मानद
 वसस्कागिनमदाविरोवावधिग वृद्धवादात्रयो ॥ लिखितवडायायः
 श्रीकलदरुदवशन वायधनकावेदियाश्व ॥ ॥ १०८८ नमावागीश्वः
 वाय ॥ नमास्ते ॥ तदादवी नरुप्रवनिवालनी ॥ नहानहानदामाव नमः नात्रीश्व
 रुंकरी ॥ मनसायिनयदवी मोत्रीकुरुनधविनी ॥ मयमरुविनासाय मनसिः
 द्युदायली ॥ वाग्यश्वत्रीरुगत्माना वागसिद्धीयकासिगाशवाग्यश्वत्रीसविद्याः

दाग्यव्वमीनम८नम८॥ गीकवउममायकं गीविगसापदावेन ॥ गीविहिमव
 वपं गीकवदयकापिग८॥ ग्वममरुतिप्रदादवी ग्वममरुयोमिनगकं ॥ ग्वमम
 उववदनि ग्वकाग्यदायनितम८॥ गीविदिननिमनन वासकविप्रदायीयं ॥
 गीगवाधिविनागाय वयसोमनमानम८॥ ॥ ऊयउगसागादवी जयसाः
 लक्षविमात्रद जननि सर्वदेवदेवानां जयसात्रदानम८॥ ॥ सफाकवी
 दम्यन्य सर्वसाक्षुविमात्रद । सर्वयायविनिमक सात्रदायियसर्वदा ॥
 ॥ गीविमवसविमफाकवसमाफ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ७ ॥

ऊ
 रसकावाहात्रया धंवायागयायावियाश्व ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ॐ समसम
 ल्यसमुवजगावद्ध स्वसिदवासयकं स्वसिसचीतिरुनानि सर्वकानि
 सुववद्धयन्वांनरावेनददमाना मगनत्रजाजो अस्तु समरिथमसर्वस
 द्विग स्वसि वीद्विपदारुवन्दु स्वसि वाहुयहु स्यद स्वसि वावजगांमा
 स्वसि यणागनषूत्र स्वसि गीवि स्वसि दिवा स्वसि सधेदिनस्तिग सद्यः समः
 स्तिरुवहु मायवां पापमांगमन जानिरु रुनानि समागतानि स्तिनानि रु
 मावडमानात्रव्यद्वन्दुमिहिसेनगुंदवाहुवववन्दुधर्म ॥